theorecreta yahoo.com

1

(ज्ञान, भाषा और पाठ्यक्रम) /
(Knowledge, Language and Curriculum)

ज्ञान का अर्थ (Meaning of Knowledge)

ज्ञान' शब्द 'ज्ञा' धातु से बना है, जिसका अर्थ 'जानना', साक्षात् अनुभव / बोध और प्रकाश से माना जाता है।

"ज्ञान के अर्थ से किसी वस्तु की वास्तविक स्थिति की जानकारी प्राप्त करना कहलाता है।"

"ज्ञान और बोध दो समीप शब्द है। ज्ञान से किसी वस्तु की जानकारी प्राप्त करने से है, और बोध वस्तु की पूर्ण रूप से अध्ययन से होता है।"

ज्ञान से तात्पर्य ये भी है कि ज्ञेय और ज्ञाता के पारस्परिक सम्बन्ध से ही ज्ञान माना जाता है। मनुष्य अपनी चेतना के माध्यम से ही ज्ञान प्राप्त करता है। इसी प्रकार इन्द्रियों की चेतना को ज्ञान की संज्ञा दी जाती है।

ज्ञान का महत्व (Importance of knowledge)

ज्ञान का मानव जीवन मे अत्यन्त महत्व है। ज्ञान के अभाव मे मनुष्य जीने की कल्पना भी नही कर सकता। वर्तमान युग मे ज्ञान के विस्फोट के कारण ही इसकी महत्ता मे अत्यधिक वृद्धि हुई है। वैसे मनुष्य का तीसरा नेत्र ज्ञान को ही कहा गया है —
जैसे

P.T.O.

Scanned with CamScanner

⇒ मनुष्य का मानसिक विकास ज्ञान के माध्यम से ही होता है।

⇒ भौतिक जगत और आध्यात्मिक जगत को समझने के लिए भी मनुष्य को अपने तीसरे नेत्र / ज्ञान की आवश्यकता पड़ती है।

⇒ भारतीय दर्शन के अनुसार - "ज्ञान मानव जीवन का सार है"।

⇒ ज्ञानी मनुष्य (ज्ञान को समझने वाला) जानकर ही अपना तथा दूसरो का कल्याण करने मे समर्थ होता है।

⇒ "ज्ञान समुद्र के बिना अमृत है, बिना औषधि के रसायन है तथा किसी की अपेक्षा न रखने वाला ऐश्वर्य है।

⇒ सुकरात के शब्दो मे - " जिसके पास सच्चा ज्ञान होता है, वह सदगुणी होने के सिवाय और कुछ भी नही हो सकता है।

⇒ ज्ञान रूपी अमृत ही मनुष्य को बोधगम्य बनाता है। क्योकि ज्ञान चेतना है, ज्ञान शक्ति है।

ज्ञान के प्रकार (Types of knowledge)

⇒ ज्ञान दो प्रकार का होता है।

(1). प्रायोगिक (अनुभवजन्य) ज्ञान

(2). सार्वभौमिक ज्ञान

P.T.O.

Scanned with CamScanner

1. <u>प्रायोगिक (अनुभवजन्य) ज्ञान</u> !- अनुभवों के द्वारा प्रायोगिक ज्ञान प्राप्त किया जाता है। इस ज्ञान से हमे सूचनाएं प्राप्त होती है। अन्य शब्दो में ऐसे निर्णय सार्वभौमिकता पर आधारित नही होते। इस ज्ञान को निरीक्षण तथा इन्द्रियगत और बाह्य जगत के अवलोकन मनुष्य को स्वयं के अनुभव से प्राप्त किया जाता है। इसलिए इन्द्रियों को ज्ञान का द्वार कहा जाता है।

2. <u>सार्वभौमिक ज्ञान</u> !- भौतिक शास्त्र के आधारभूत सिद्धांतो तथा गणित के कुछ ऐसे निर्णय जो पहले से ही सिद्ध किये गये है और व्यक्ति उन नियमों के द्वारा ही कार्य करते है। वह सार्वभौमिक ज्ञान होता है।

ज्ञान (knowledge)

- प्रायोगिक (अनुभवजन्य) ज्ञान
  - (व्यक्ति द्वारा किये गये अलग/अलग अनुभव) प्राप्त करना
  - $HCl + HCl = ?$
- सार्वभौमिक ज्ञान
  - पहले से ज्ञात प्रमाणित अनुभव — (सत्यमेव जयते),
  - $AC^2 = AB^2 + BC^2$

P.T.O.

Scanned with CamScanner

ज्ञान भारतीय दार्शनिको की दृष्टि से दो प्रकार का होता है —

1. परा ज्ञान

2. अपरा ज्ञान

1. परा ज्ञान :— परमात्मा को जानना अधिगम का अन्तिम पड़ाव है, अथीत प्रकृति मे आध्यात्मिकता की झलक पाना। यह विद्या आध्यात्मिकता के विषय मे ज्ञान से सम्बन्धित है। इस ज्ञान को मानव प्रकृति का सर्वोच्च ज्ञान माना गया है। यह ज्ञान व्यक्ति के स्वयं को जानने, आत्मा से और परमात्मा से सम्बन्धित ज्ञान है।

2. अपरा ज्ञान :— जो ज्ञान हम अपनी इन्द्रियो से और तर्क से प्राप्त करते है, उस ज्ञान को ही अपरा ज्ञान कहा जाता है। यह बाह्य भौतिक संसार से सम्बन्धित है। अपरा ज्ञान जगत के विचारो और अनगिनत मस्तिष्को के अनुभवो का परिणाम है।